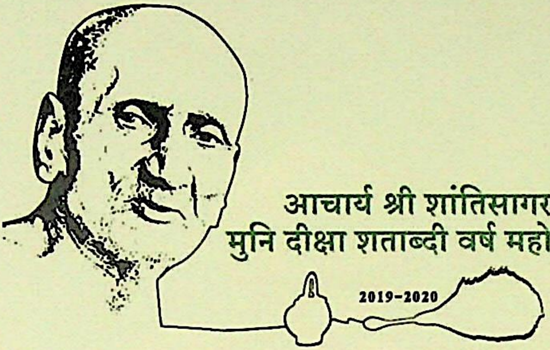

आओ शान्ति मार्ग पर चलें

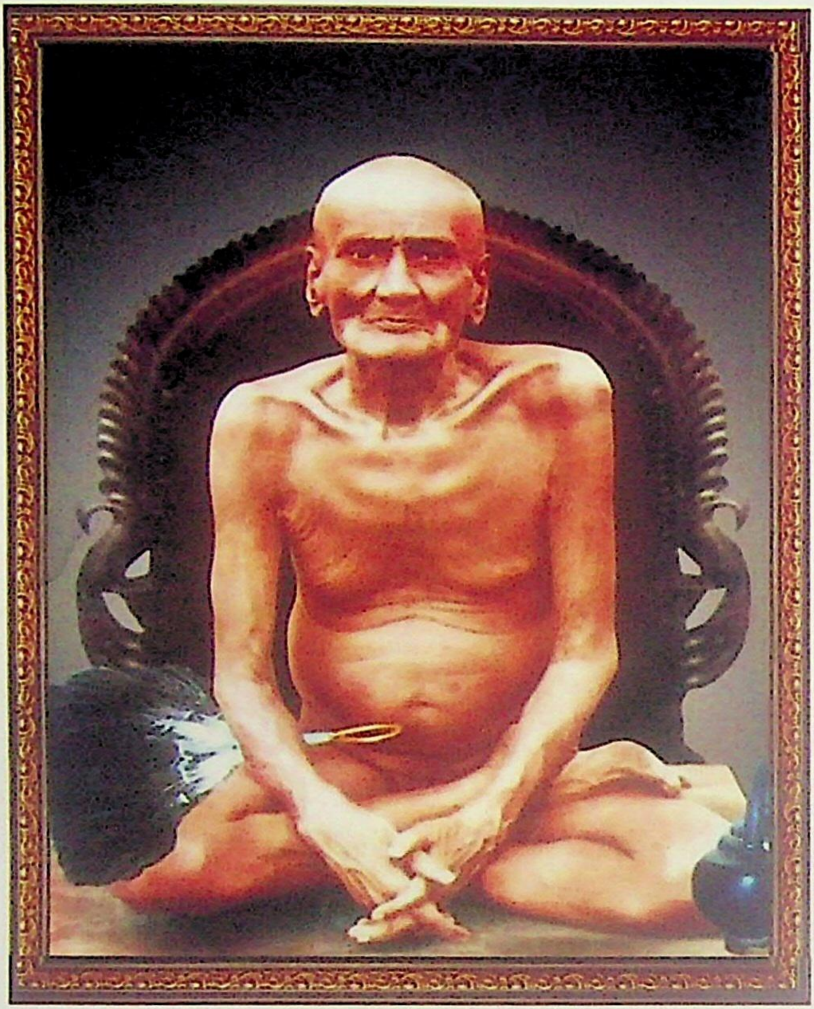

प्रात:स्मरणीय प्रथमाचार्य परमपूज्य चारित्र चक्रवर्ती
108 श्री श्री शांतिसागर जी महाराज

आचार्य श्री शांतिसागर
मुनि दीक्षा शताब्दी वर्ष महोत्सव

2019-2020

शुभकामना एवं सहयोग

परम पूज्य
समस्त दिगम्बर आचार्य
समस्त त्यागी वृंद
एवं
समस्त भट्टारक गण

20वीं सदी के जीवन्त समयसार एवं मूलाचार परम तपस्वी, रत्नत्रय त्रिवेणी के प्रयागराज, अपारतेजःपुञ्ज के स्वामी, आत्मविद्या के महाज्ञानी, चारित्रधर्म के प्रमुख युगप्रवर्तक, जिनवाणी एवं संस्कृति संरक्षक, गुरुणांगुरु, आद्यदिगम्बराचार्य, परमपूज्य प्रातः स्मरणीय **'108 श्री शान्तिसागरजी महाराज'** के महनीय पवित्र जीवन से उनके समय में कई लोग एवं परिवार परिचित रहे हैं। उन पूर्वजों से एवं साधुगणों से महामना आचार्यदेव की गौरवगाथा का परिचय यदा कदा प्राप्त भी होता रहा है।

पं. प्रवर श्री सुमेरुचन्द्रजी दिवाकर ने अपने आराध्य परमगुरुदेव के जीवन से सम्बन्धित ग्रन्थ **'चारित्र चक्रवर्ती'** के माध्यम से उन परमपूज्य आचार्यश्री के जीवन को स्थायित्व प्रदान करने का बहुत बड़ा एवं असाध्य कार्य किया है।

दिगम्बर जैन समाज के सामने फिर एक स्वर्णिम अवसर आया है जब उन गुरुदेव आचार्यश्री की दीक्षा के 100 वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं, अतः **'दीक्षा शताब्दी महोत्सव'** को समग्र समाज को तन-मन-धन से पूर्ण उत्साह के साथ मनाना है। इसके लिए **'श्रवणबेलगोला'** के भट्टारक जगद्गुरु कर्मयोगी 'श्री चारुकीर्ति स्वामीजी' के नेतृत्व में **'राष्ट्रीय कमेटी'** का निर्माण हुआ है। 21वीं सदी में पहुंचे लोगों को भी उन युगस्रष्टा आचार्य भगवन् का परिचय सबको मिलकर 'महोत्सव' के माध्यम से कराना है।

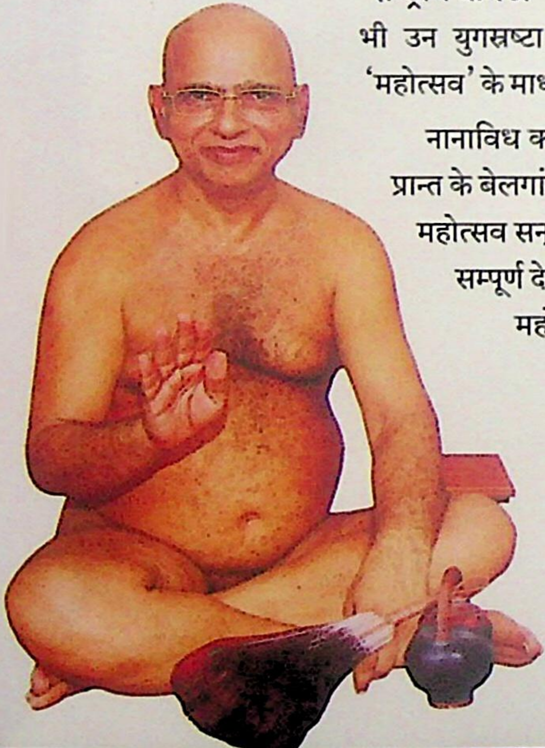

नानाविध कार्यक्रमों द्वारा आचार्यश्री की दीक्षास्थली कर्नाटक प्रान्त के बेलगांव जिले में स्थित **'यरनाल'** ग्राम में दीक्षा शताब्दी महोत्सव सन् 2019 से प्रारम्भ कर विविध आयोजनों के साथ सम्पूर्ण देशभर में दिगम्बर जैन समाज को मनाना है तथा इस महोत्सव के उन युगस्रष्टा आचार्य के जीवन से तथा उनके द्वारा किये गये कार्यों एवं समग्र संस्कृति को दिये गये दिव्य अवदान से जैन व जैनेतर और देश-विदेश की समाज को परिचित कराना है।

- आचार्य वर्धमानसागर

प्रमुख योजनाएं

- प्राचीन दिगम्बर जैन आचार्य श्री शांतिसागर परम्परा का इतिहास प्रकाशित करना।
- प्राचीन मंदिरों एवं प्रतिमाओं का जिर्णोद्धार
- आचार्य श्री का परिचय घर-घर में, बच्चों तक पहुंचाने की योजना में हिंदी, अंग्रेजी तथा राज्य भाषाओं में प्रकाशित करना।
- आचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज के जीवन पर डाक्यूमेंट्री बनाना।
- आचार्य श्री के जीवन परिचय के फोटो चित्रावली को प्रकाशित करना।
- देश के तीर्थ क्षेत्रों तथा मंदिरों में आचार्य श्री का अंतिम संदेश अंकित कराना।
- कवर एवं सिक्के प्रकाशित करना।
- आचार्य श्री के नाम से प्रशस्ति/सम्मान करना।
- यरनाल में आचार्य श्री के जीवन परिचय आधारित स्तम्भ, अन्य स्थानों पर भी कीर्ति स्तम्भ, ग्रंथ भंडार, आयुर्वेद औषधालय, त्यागी भवन, स्वाध्याय शाला, धार्मिक पाठशाला खोलना।
- परमपूज्य श्री 108 वर्धमान सागर जी की प्रेरणा से मूलाचार ग्रंथ ताम्रपत्र पर अंकित करना। गाथाओं को शिलापट्ट पर लिखवाकर भवन की दीवारों में लगाना।
- मूलाचार एवं धार्मिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित करना।
- धार्मिक एवं आधुनिक लौकिक शिक्षण को प्रोत्साहन देना।
- विभिन्न माध्यमों से प्रचार-प्रसार करना।

स्मरणिका (संस्मरण) प्रकाशन

हिन्दी, कन्नड़, मराठी, गुजराती, अंग्रेजी भाषा में

पं. सुमेरुचन्दजी दिवाकर
द्वारा लिखित चारित्र चक्रवर्ती पुस्तक से कुछ अंश

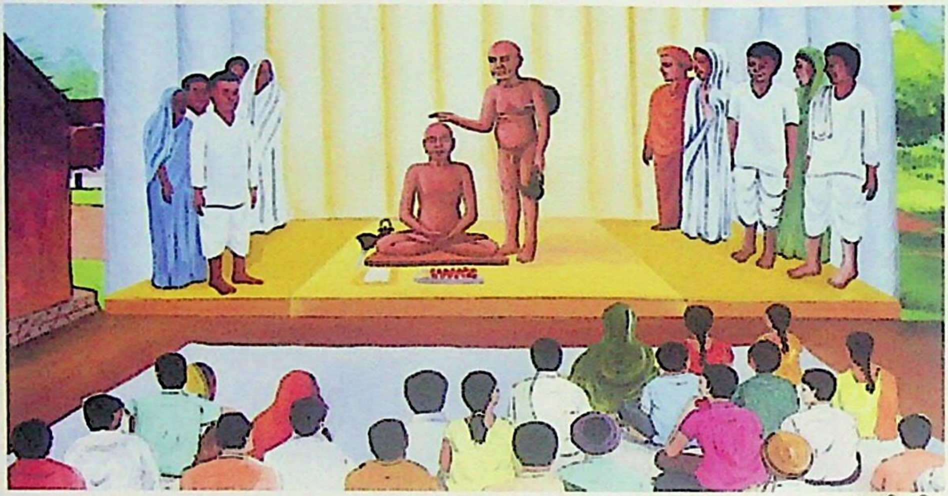

काल्पनिक चित्र

यरनाल के पंचकल्याणक में मुनि-दिक्षा

ऐनापुर में एक पक्ष पर्यन्त रहकर ये ऐलक शांतिसागर जी यरनाल में पधारे। वहां जिनेन्द्र भगवान् का पंचकल्याणक महोत्सव बड़े वैभव के साथ हो रहा था। आसपास जैनियों की लाखों की संख्या है, इसलिये अपरिमित जनसमुदाय उस महोत्सव के दर्शनार्थ वहां एकत्रित हुआ था।

यरनाल में निर्ग्रन्थ मुनि देवेन्द्रकीर्ति महाराज पधारे थे।

ऐलक महाराज ने उनके समीप जाकर प्रार्थना की- ''भगवन्! मेरी प्रार्थना है, कि मनुष्य-जन्म की उत्कृष्ट निधि निर्ग्रन्थ दीक्षा देकर मेरे जन्म को कृतार्थ करें।''

उस समय देवेन्द्रकीर्ति स्वामी ने कहा- ''यह दिगम्बर दीक्षा लेना साधारण बात नहीं है, आज समय की गति विचित्र है। मिथ्यात्वी जीवों की प्रचुरता है। दुष्ट लोगों के अभद्र वचन सुनकर सहज ही मन में मलिनता और व्रत के प्रति ग्लानि आना संभव है। परीषहों का प्रचंड प्रहार भी परिणामों को विचलित कर आत्मा को हिला देता है। यदि निर्ग्रन्थ पद लेकर निर्दोष रीति से उसका पालन न किया, तो जीव गिरकर नीच पद को पाता है। इसलिए असमर्थ आत्मा

इसे न धारण कर शक्ति के अनुसार संयम लेते हैं। सोचो! क्या तुम इस दुर्धर निर्ग्रन्थ ५५ का भार उठा सकोगे या नहीं? जल्दी में काम करना पीछे पश्चाताप का कारण होता है।''

स्वामी के महत्त्वपूर्ण उपदेश ने यह स्पष्ट कर दिया कि महाव्रत का धारण करना तलवार की धार पर चलने से भी कठिन है। ज्ञान और वैराग्य विभूषित मोक्षाभिलाषियों को यह आत्मा के लिये पुष्पशैय्या सदृश आह्लादप्रद होती है; किन्तु दुर्बल आत्मा को यह शरशैय्या के समान संक्लेश पैदा करती है।

महाराज ने गुरुचरणों में विनयपूर्वक कहा- ''स्वामिन्! आपका कथन अक्षरशः सत्य है, किन्तु मैंने वर्षों से निर्ग्रन्थ दीक्षा के हेतु अपनी आत्मा को तैयार कर लिया है। जिनेन्द्र भगवान् के प्रसाद से तथा आपके आशीर्वाद से इस पद की प्रतिष्ठा की सदा रक्षा करूंगा। उसमें कदाचित् प्राण जावे तो मुझे उसकी परवाह नहीं है।''

इनके परिणाम वैराग्यसागर में डूबे हुए थे। उनके पीछे संयम, सदाचार तथा सत्य का अपार बल था। इससे गुरुदेव की आत्मा में यह विश्वास उत्पन्न हो गया कि सातगौड़ा का प्रत्येक शब्द सत्य की शक्ति से परिपूर्ण रहा है। उपस्थित हजारों लोगों ने गुरुदेव से विनय की ''महाराज! ये बहुत पवित्र आत्मा है। ये स्वप्न में भी अपने व्रत को दूषण न लगावेंगे।''

अंत में निर्ग्रन्थ दीक्षा देने का निश्चय हो गया। दीक्षा देने का श्रेष्ठ योग भी समीप था। पंचकल्याणक के समय भगवान् के वैराग्य का काल आया। लौकान्तिक देवों ने आकर भगवान् के वैराग्य की अनुमोदना की। भगवान् पालकी में विराजमान होकर दीक्षावन में पहुंचे। ऐसे उत्कृष्ट अवसर पर ऐलकजी ने निर्ग्रन्थ रूप धारण करने का निश्चय किया। भगवान् के साथ ही उन्होंने वस्त्र का त्याग कर दिगम्बर मुद्रा धारण की और केशों का लोंच आरम्भ किया। अब ऐलकजी मुनि शांतिसागर बन गये, जिन्हें जगत् चारित्र चक्रवर्ती आचार्य महाराज के नाम से हार्दिक भक्ति द्वारा पूजता है।

उस समय वैराग्य का अवर्णनीय रस आ रहा था। हजारों भव्य स्त्री-पुरुष जय-जयकार कर रहे थे। उस समय के शांतरस का वर्णन कौन कर सकता है, जब इन नैसर्गिक मुनि जीवन वाली आत्मा ने आज चिरकांक्षित पवित्र मुद्रा धारण की। गुरुदेव ने इनका नाम गुणों को देखकर शांतिसागर रखा। इनके नाम में आगत सात शब्द शांति का ही द्योतक रहा है।

जब महाराज की दीक्षा का कार्य हो रहा था, उस समय एक महाराज के प्रेमी श्रीमंत

नेत्रों से अश्रुधारा बहा रहे थे। वे सोचते थे 'किस प्रकार इनके मुनिपद का निर्वाह होगा। गृहस्थ समाज शिथिलता और प्रमाद में डूबी है। उसे आगम की आज्ञा का ध्यान नहीं है उस समय महाराज ने सांत्वना के शब्द कहकर समझाया, ''डरने की क्या बात है? यदि व्रत पालने के योग्य सामग्री न रहेगी तो हम जंगल में रहकर समाधि धारण कर लेंगे।''

अब शांतिसागर महाराज की मुद्रा और तीर्थंकरों की जिनमुद्रा में रंचमात्र भी अंतर नहीं है। वस्त्र, वैभव, परिग्रह के कारण ही मानव मानव में भेद की गहरी खाई खड़ी होती है, किन्तु दिगम्बरत्व सच्चा साम्य उत्पन्न कर देता है।

यरनाल ग्राम में सन् 1920 को पंचकल्याणक में शांतिसागर महाराज ने मुनि दीक्षा धारण की। इसी मार्ग पर अब देश में लगभग 1800 पिच्छीधारी साधु प्रभावना कर रहे हैं। इसलिए...

यरनाल में कार्ययोजना

- त्यागी निवास का निर्माण करना।
- 'शांतिस्तम्भ' का निर्माण लोकार्पण समारोह करना।
- परमपूज्य प्रथमाचार्य शांतिसागर स्मारक भवन का निर्माण करना।
- आचार्यश्री के जन्म गांव में स्मारक बनाना।
- भोज ग्राम में स्मारक - कॉलेज, पॉलीटेकनिक, पब्लिक स्कूल संचालन में सहयोग देना।
- क्षुल्लक दीक्षा स्थान 'उत्तुर' (त. गडहिलज जि. कोल्हापुर) में निर्माण कार्य करना।
- आचार्य पद आरोहण स्थान 'समडोली' में निर्माण कार्य करना।
- ऐलक दीक्षा 'गिरनार' तीर्थ पर हुई है। वहां पर भी कीर्ति स्तम्भ निर्माण कार्य करना।
- 'चारित्र चक्रवर्ती' पदवी गजपंथा में दी गई है। वहां पर भी कीर्ति स्तम्भ का निर्माण कार्य करना।
- देश व विदेशों में जहां से योग्य सूचनाएं आती रहें, उसी तरह निर्माण कार्य कराना।
- यरनाल में शांतिस्तम्भ। अन्य चार स्थानों पर स्मारक।

20वीं सदी के प्रथमाचार्य परमपूज्य चारित्र चक्रवर्ती प्रातः स्मरणीय 108 श्री श्री शान्तिसागरजी (दक्षिण) का परिचय

जन्म	-	आषाढ़ कृ.6 वि.सं. 1929 ईस्वी 1872, बुधवार।
जन्मस्थान एवं नाम	-	येलगुल (कर्नाटक), सातगौड़ा पाटील (जैन), भोजग्राम समीप येलगुल
माता-पिता	-	श्रीमती सत्यवती - भीमगौड़ा पाटील।
क्षुल्लक दीक्षा	-	ज्येष्ठ शु.13 वि.सं. 1972 ईस्वी 1915, उत्तूर ग्राम (महाराष्ट्र)।
ऐलक दीक्षा	-	गिरनारजी सिद्धक्षेत्र पर, भगवान नेमिनाथ के चरणों में पांचवी टोंक पर।
मुनि दीक्षा	-	फाल्गुन शु.14 वि.सं. 1976, ईस्वी 1920 यरनाल ग्राम (कर्नाटक) में।
क्षु. एवं मुनि दीक्षा गुरु	-	मुनिश्री देवेन्द्र कीर्तिजी महाराज।
आचार्य पद	-	आश्विन शु.11 वि.सं. 1981, ईस्वी 1924 समडोली ग्राम में बुधवार के दिन, इसी दिन 2 मुनि दीक्षा एवं 1 ऐलक दीक्षा प्रदान की।
चारित्र चक्रवर्ती	-	वि.सं. 1994, ईस्वी 1937, गजपंथा सिद्धक्षेत्र पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में।
उत्तर भारत में मंगल विहार एवं वर्षायोग	-	तीर्थराज सम्मेद शिखरजी की वन्दनार्थ मार्गशीर्ष कृ. 1 वि.सं. 1984 ईस्वी सन् 1927 में।
	-	बम्बई के सेठ गेंदनमलजी संघपति की प्रार्थना पर।
	-	उत्तर भारत में सन् 1928 से 11 वर्षायोग सम्पन्न किये।
पद विहार	-	अपने संयमी जीवन में 35000 मील से अधिक पद विहार किया।

तप साधना	-	सिंहनिष्क्रीड़ित, कवलचन्द्रायण आदि अनेकों व्रतों को करते हुए जीवन में कुल 9938 उपवास, रसपरित्याग इत्यादि बहिरंग और अंतरंग तप किये।
कुल वर्षायोग	-	अपने दीक्षित जीवन में 41 वर्षायोग सम्पन्न किये।
दीक्षित शिष्य	-	15 मुनि, 3 आर्यिका, 8 ऐलक, 17 क्षुल्लक, 9 क्षुल्लिका और सैकड़ों व्रती श्रावकरूप चतुर्विध संघ।
विशेष	-	सन् 1925 में गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी के सम्पन्न हुए 'महामस्तकाभिषेक' में सान्निध्य प्रदान किया। श्रवणबेलगोला से ही आप 'गुरुणांगुरु' कहे जाने लगे। जिनालय रक्षार्थ 3 वर्ष 12 दिन तक अन्न ग्रहण का त्याग कर धर्मरक्षा एवं संस्कृति की रक्षा की। ताड़पत्रों पर लिखित 'षट्खंडागम और महाबन्ध' ग्रन्थों की कीटों से रक्षा हेतु उन ग्रन्थों को ताम्रपत्रों पर अंकित कराया।
उत्कृष्ट सल्लेखना ग्रहण	-	24 अक्टूबर, वि.सं. 2008 में 12 वर्ष की उत्कृष्ट सल्लेखना गजपंथा सिद्धक्षेत्र पर ग्रहण की।
स्वकीय आचार्यपद प्रदान	-	36 दिवसीय सल्लेखना के मध्य 26 अगस्त 1955 को पत्र लिख।कर अपने प्रथम निर्ग्रन्थ शिष्य मुनिश्री वीरसागरजी को आचार्यपद प्रदान किया।
अंतिम उपदेश	-	8 सितम्बर, 1955 को 36 दिवसीय सल्लेखना के मध्य 26वें दिन 22 मिनिट तक मराठी भाषा में दिया।
सल्लेखना पूर्वक देहविलय	-	भाद्रपद शु.2, 18 सितम्बर 1955 को प्रातः 6 बजकर 50 मिनिट पर महाराष्ट्र प्रान्त के कुन्थलगिरि सिद्धक्षेत्र पर सल्लेखना पूर्वक आपका देह विलय हुआ।

पंच-आचारपंचग्गिसंसाहया, बारसंगाइ सुअजलहि अवगाहया।
मोक्खलच्छी महंती महं ते सया, सूरिणो दिंतु मोक्खं गयासंगया। 3।

जो पांच आचारों का साधन करते हैं, द्वादशांगरूपी समुद्र में अवगाहन करते हैं तथा जो आशाओं से रहित मोक्ष को प्राप्त हुए हैं, ऐसे आचार्य परमेष्ठी मेरे लिये सदा महती मोक्षमार्ग प्रशस्त करें।। 3 ।।

- प्राकृतभक्तिसंग्रह

"जो भी धर्म पर चलता है उसके लिए हमारा आशीर्वाद है। जो हमारा विरोध करता है, उस पर भी हमारा प्रेम है। उसे भी हमारा आशीर्वाद है कि वह सद्बुद्धि प्राप्त कर आत्मकल्याण करे।"

- आचार्यश्री शांतिसागरजी

दिगम्बर निर्ग्रन्थाचार एवं मुनिराज ही धर्माधार एवं जैनधर्म के स्थायी स्तम्भ हैं। सप्तभयातीत होते हुए भी संसारभीरुता आपका सर्वोपरि गुण है। उनकी मन-वचन एवं काय सम्बन्धी कोई भी प्रक्रिया आप्त-आगमाज्ञा के विपरीत नहीं होती।

आचार्यश्री ने सन् 1920 में निर्ग्रन्थ मुनिदीक्षा ली। इस समय से लेकर 1955 तक के 35 वर्षों में महाराज ने 9938 दिन उपवास किया। क्या इस कठोर तपश्चर्या में आचार्यश्री की कोई बराबरी कर सकता है? यह तो उनकी विशिष्ट आत्मशक्ति का प्रतीक है।

- आर्यिका विशुद्धमती जी
द्वारा लिखित पुस्तक से कुछ अंश

आचार्य महाराज ने सबसे महान् कार्य यह किया है कि जगत् को तारने वाले, परम तपोनिधि, रत्नत्रय स्वरूप, नग्न दिगम्बर वीतराग मुनिराज श्री वीरसागरजी महाराज, मुनिराज नेमिसागरजी महाराज तथा परमपूज्य चन्द्रसागरजी महाराज, ऐलक पायसागरजी, ऐ. पार्श्वकीर्तिजी (आ. कुन्थुसागरजी का नाम था), ऐ. अनन्तकीर्तिजी और क्षुल्लकश्री विमलसागरजी आदि मोक्षमार्गरत परम पवित्र आत्माओं को तैयार कर दिया। अन्यथा उन पुरुषरत्नों के इस वीतराग अवस्था में हमें कभी दर्शन न मिलते।

सौ बात की एक बात है कि सैकड़ों कर्मठ विद्वानों के सैकड़ों वर्ष पर्यन्त रात-दिन अथक परिश्रम करने पर जो समाजोत्थान एवं समाज कल्याण का कार्य अति कठिनता से हो सकता था वह त्यागमूर्ति आचार्यश्री शान्तिसागरजी के विहार से कुछ ही दिनों में सरलतया हो रहा है।

इसके पूर्व क्षुल्लक अवस्था में ही बाहुबली पहाड़ के जिन मन्दिर में सर्प शरीर पर चढ़ गया था। इस प्रकार पांच बार सर्प का उपसर्ग हुआ। सम्भव है कि कठिन तपश्चर्या में उत्तीर्ण हो जाने के कारण आगामी उपसर्ग और परीषहों को दूर करने के लिए हैं।

जैसा ज्ञानोत्कर्ष वैसा ही चारित्रोत्कर्ष

आचार्य महाराज स्वात्मा-साधन में कितने सावधान रहते हैं, यह बात वे ही लोग भलीभांति जानते हैं जिन्हें कुछ माह रात-दिन उनकी चर्या देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आचार्यश्री के लिए 8-10 उपवासों का धारण करते रहना एक साधारण सी बात है, उसी प्रकार 5-6 घंटे किसी भी दृढ़ासन से ध्यान में लीन हो जाना भी परमाभ्यस्त विषय है।

श्री आचार्यवचन ही आगम है-

श्री आचार्य शांतिसागरजी महाराज अत्यल्प बोलते हैं। जो कुछ कहते हैं, तुले हुए परिमित शब्दों में कहते हैं। आगम का अनुभव करके ही कहते हैं। जब तक जिस विषय का आगम नहीं खोज लेते तब तक उस विषय का निर्णय वे कभी नहीं देते हैं। आपकी समस्त

क्रियाऐं भी आगम के अनुकूल प्रवर्तित होती हैं। आगम के अनुकूल हुए भी जो क्रिया जघन्यता को लिये होती है उसे आप आदरणीय न समझकर उच्चता की ओर ही लक्ष्य रखते हैं।

- पंडित बंशीधर जी शास्त्री, शोलापुर
द्वारा 1932 में लिखित
आचार्य शांतिसागर महामुनिराज चरित्र पुस्तक से कुछ अंश।

चारित्रचक्रवर्ती प्रथमाचार्य 108 श्री श्री शान्तिसागरजी महाराज का अन्तिम आदेश तथा उपदेश

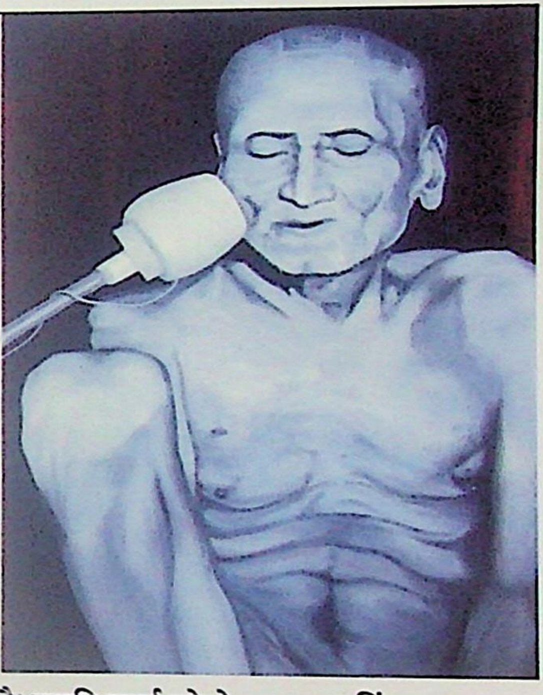

सारांश : धर्मस्य मूलं दया। जिनधर्म का मूल क्या है? सत्य, अहिंसा, मुख से सभी सत्य बोलते हैं, पालते नहीं। मुख से कहो रसोई करो, भोजन करो; कहने से पेट भरेगा क्या? क्रिया किये बिना, भोजन किये बिना पेट नहीं भरता है, बाबा। इसलिए क्रिया करने की आवश्यकता है। क्रिया करनी चाहिए, तब अपना कार्य सिद्ध होता है। बाकी कार्य छोड़ो, सत्य, अहिंसा का पालन करो। सत्य से सम्यक्त्व आ जाता है। अहिंसा में किसी जीव को दुःख नहीं दिया जाता। अतः संयम का पालन करो, सम्यक्त्व धारण करो, तब आपका कल्याण होगा, इसके बिना कल्याण नहीं होगा। (अब बस) ....।

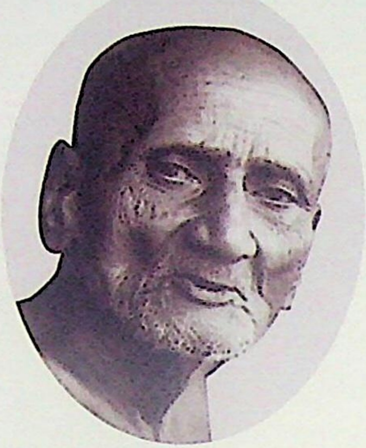

आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज के कथन

- बड़प्पन अपने-आप नहीं आता। छोटों की सेवा द्वारा बड़प्पन मिलता है। विनयवान सुखी रहता है।
- बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों के एवं महापुरुषों के जीवन-चरित्र का पता नहीं है, तब हमारे चरित्र का क्या होगा? हम संसार के साधुओं में सबसे छोटे हैं। हमारा अन्तिम नम्बर है, हमसे आप क्या लाभ ले सकोगे? हमारे जीवन में कुछ भी महत्त्व की बात नहीं है।
- हमें अपनी आत्मा के सिवा पर-पदार्थ की चिन्ता नहीं है। उसी प्रकार संसार में कुछ भी हो जाये, तो हमें उसका क्या डर है?
- हमने खूब देखा है, इस दुनिया में कोई भी सुखी नहीं है। रंक तो दुखी हैं ही, कोट्याधीश और अधिक दुखी हैं। निर्ग्रन्थ अवस्था में जो आनन्द प्राप्त होता है वह अनिर्वचनीय है।
- दुष्ट और सज्जन दोनों पर साधु का समान भाव रहना चाहिए। यदि सज्जन पर प्रेम हो और दुष्ट पर द्वेष तो साधुता कैसे रहेगी? भले-बुरे दोनों पर रागद्वेष को जीतना साधु का कर्तव्य है।

हस्त - आचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज

शताब्दी वर्ष को यशस्वी बनाओ

रोड़ मैप

रोड से

बेलगांव से यरनाल	- 50 किमी	हुकेरी से यरनाल	- 16 किमी
स्तवनिधि से यरनाल	- 25 किमी	चिकोड़ी से यरनाल	- 30 किमी

रेल से

रायबाग रेल्वे स्टेशन से	- 48 किमी	बेलगांव रेल्वे स्टेशन से	- 55 किमी

- विशेष सहयोग -

• सकल दिगम्बर जैन समाज, यरनाल • शास्त्री परिषद • विद्वत परिषद
• राष्ट्रस्तरीय एवं विभागस्तरीय दिगम्बर जैन संघ एवं संस्थाएं

परम संरक्षक : पद्मविभूषण डॉ. श्री वीरेन्द्र जी हेगड़े, धर्मस्थल
गौरवाध्यक्ष : श्री अशोक जी पाटनी, किशनगढ़

श्री श्रीपाल गंगवाल, गेवराई **अध्यक्ष** **93253-25177**	श्री रावसाहेब पाटील, बोरगांव **कार्याध्यक्ष** **94481-14658**	श्री अनिल सेठी, बैंगलोर **योजनाध्यक्ष** **96200-22222**
प्रो. श्री डी.ए. पाटील, जयसिंगपुर **महामंत्री** **98225-31464**	श्री राकेश सेठी, कोलकाता **संयोजक एवं समन्वयक** **98302-55464**	श्री सुरेश सबलावत, जयपुर **संयोजक एवं समन्वयक** **98281-11101**
श्री अशोक सेठी, बैंगलोर **कोषाध्यक्ष** **93437-35694**	श्री विनोद दोड्डणावर, बेलगावी **सह-संयोजक** **98800-22555**	श्री महावीर निलजगी, यरनाल **सह-संयोजक** **94484-65055**

आचार्य श्री शांतिसागर महाराज
मुनि दीक्षा शताब्दी महोत्सव राष्ट्रीय आयोजन समिति